सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 301 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, सोमवार, 12 दिसम्बर, 2022
मूल्य ₹ 3/-

हर्ष और आनंद से परिपूर्ण जीवन केवल ज्ञान और विज्ञान के आधार पर संभव है।
-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

नीतीश के बयान से बिहार में... 8 | निकाय चुनाव में बेहतर प्रदर्शन... 3 | नफरती बयानों पर तत्काल सख्त... 7

जीएसटी की छापेमारी से दहशत में व्यापारी, शहरों में प्रतिष्ठानों पर लटके ताले

71 जिलों में 248 टीमों के 180 से अधिक व्यापारियों के यहां छापों से मचा हड़कंप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में इस समय जीएसटी की छापेमारी से माहौल गरमाया हुआ है। प्रदेश के हर जिले में जीएसटी की टीम के आने की सूचना मिलते ही व्यापारी दुकान बंद कर भाग जा रहे हैं। बड़े-बड़े बाजारों में सन्नाटा पसरा हुआ है। जीएसटी की टीम दुकानों की जांच करने में लगी है और गड़बड़ी पाए जाने पर जुर्माना लगा रही है।

वहीं, लोगों का आरोप है कि छापेमारी की आड़ में कारोबारियों का उत्पीड़न किया जा रहा है। इसके विरोध में कई स्थानों में व्यापारी सड़क पर भी उतरे हैं। विधायकों और सांसदों का घेराव भी किया जा रहा है। गोंडा में आयकर और सेल्स टैक्स के डर से व्यापारियों ने दुकानों के शटर गिरा दिए। विभागीय छापेमारी के डर से शहर के कई बाजारों में सन्नाटा पसरा रहा। इन बाजारों में छोटे रेहड़ी और पटरी की दुकानों को छोड़कर शहर के सभी मुख्य बाजार बंद दिखे। शहर के रानीबाजार और चौक बाजार की दर्जनों दुकानें जीएसटी की छापेमारी के डर से खुली ही नहीं। वहीं, सहारनपुर में पिछले कई दिनों से जीएसटी की टीम लगातार डेरा डाले हुए है। इसके चलते शहर से लेकर देहात तक के बाजारों में सन्नाटा पसरा हुआ है। जीएसटी टीम आने की सूचना के चलते छोटे-बड़े सभी व्यापारियों में दहशत है। सभी ने बाजार और दुकान बंद किया हुआ है। सहारनपुर शहर में उत्तर भारत की सबसे बड़ी कपड़ा मंडी रायवाला बाजार भी सुनसान नजर आ रहा है। इसके अलावा देवबंद, बेहट, गंगोह, रामपुर मनिहारान, नकुड़, अंबेहटा, सरसावा, चिलकाना सहित देहात के सभी नगर और कस्बा में बाजार बंद पड़े हुए हैं। जीएसटी कार्रवाई की आशंका के चलते दुकानदार दुकानें नहीं खोल रहे हैं। इसके अलावा रेत बजरी और सीमेंट बेचने वालों ने भी अपनी दुकानें बंद की हुई हैं।

यूपी में सड़कों पर उतरे व्यापारी भाजपा के विधायकों और सांसदों का किया घेराव

विरोध बढ़ता देख बैकफुट पर आयी योगी सरकार रोकी टीमों की कार्रवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राज्यकर विभाग द्वारा चलाये जा रहे जीएसटी चोरी के खिलाफ अभियान पर अनिश्चितकालीन रोक लगा दी गई गई। सूत्रों के हवाले से प्राप्त जानकारी के अनुसार व्यापारियों के आक्रोश को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। छापेमारी के खिलाफ व्यापारी आक्रोशित हैं और प्रदर्शन कर रहे हैं। राज्यकर आयुक्त मिनिस्ती एस. के निर्देश पर जीएसटी चोरी के खिलाफ अभियान चल रहा था। इस अभियान के छठे दिन भी सभी 71 जिलों में कई कारोबारियों के यहां छापा पड़ा और उनके लेनदेन की जांच की गई। 248 टीमों द्वारा एक साथ की गई कार्रवाई में बड़े पैमाने पर कर चोरी पकड़ी जा रही थी। इसी कड़ी में छठे दिन भी 180 से अधिक व्यापारियों के यहां छापा डाल कर जांच-पड़ताल की गई। इसके पहले, व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर छापा मारने की कार्रवाई रविवार को भी जारी रही। अधिकारियों ने छठे दिन छापों में जहां 19.05 करोड़ रुपये की कर चोरी पकड़ी, वहीं तमाम व्यापारियों से 1.37 करोड़ रुपये जुर्माना भी जमा कराया। छठे दिन माल आदि की जब्ती नहीं की गई।

चार साल बाद संसद पहुंचीं डिंपल यादव, सांसद के रूप में ली शपथ

» संसद में सोनिया गांधी के पैर छूकर लिया आशीर्वाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मैनपुरी उपचुनाव में मिली ऐतिहासिक जीत के बाद समाजवादी पार्टी की सांसद और पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव ने आज सांसद के रूप में लोकसभा में अपनी शपथ ली। डिंपल को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

डिंपल अपने पति और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव के साथ दिल्ली में स्थित संसद भवन पहुंचीं थीं। संसद में शपथ लेने के बाद डिंपल यादव ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया।

गुजरात में भूपेंद्र की दूसरी बार ताजपोशी

» आठ कैबिनेट, दो स्वतंत्र प्रभार व छह ने राज्यमंत्री के रूप में ली शपथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अहमदाबाद। गुजरात में सोमवार को भूपेंद्र पटेल की दूसरी बार ताजपोशी हो गई। भूपेंद्र पटेल ने सोमवार को सीएम पद की शपथ ली इससे पहले भूपेंद्र पटेल ने सितंबर 2021 में पिछले कार्यकाल के लिए शपथ ली थी। भूपेंद्र पटेल के अलावा 16 विधायकों ने भी मंत्रिपद की शपथ ली।

बीजेपी ने भूपेंद्र पटेल के शपथ ग्रहण को मेगा शो बनाने की पूरी कोशिश की। उनके शपथ ग्रहण पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री शामिल हुए। भूपेंद्र पटेल को राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

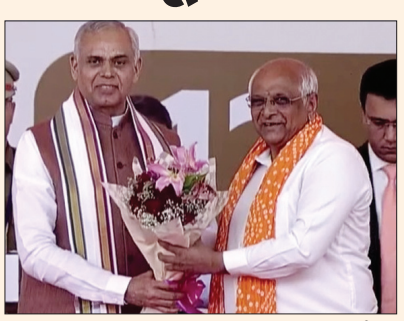

इन 16 मंत्रियों ने ली शपथ

कैबिनेट मंत्री
कनुभाई देसाई, ऋषिकेश पटेल, राघवजी पटेल, बलवंत सिंह राजपूत, कुंवरजी बावलिया, मुलुभाई बेरा, भानुबेन बाबरियाढ व कुबेर डिंडोर।

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
हर्ष सांघवी व जगदीश विश्वकर्मा

राज्यमंत्री
मुकेश पटेल, पुरुषोत्तम सोलंकी, बच्चू भाई खाबड़, प्रफुल्ल पानसेरिया, भीखू सिंह परमार व कुंवरजी हलपति।

हिमाचल में भी जल्द लागू हो सकती है ओल्ड पेंशन स्कीम

» कांग्रेस शासित राजस्थान और छत्तीसगढ़ में पहले से लागू है यह योजना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में नई सरकार का गठन हो चुका है। सुखविंदर सिंह सुक्खू प्रदेश के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ भी ले चुके हैं। राज्य में कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद अब सभी को उम्मीद है कि राज्य में जल्द ही ओल्ड पेंशन स्कीम को लागू कर दिया जाएगा। चुनाव में भी ओल्ड पेंशन स्कीम काफी बड़ा मुद्दा रहा था। प्रदेश में सत्ता परिवर्तन में भी शायद इसकी अहम भूमिका रही।

बीजेपी सरकार के कार्यकाल के आखिरी साल में एनपीएस कर्मचारियों के आंदोलन ने हिमाचल प्रदेश में ओल्ड पेंशन स्कीम को एक अहम मुद्दा बनाया। कांग्रेस ने इस मौके का फायदा उठाते हुए कर्मचारियों को वादा किया कि हिमाचल में कांग्रेस की सरकार बनते ही पहली कैबिनेट में यह फैसला लिया जाएगा और ओल्ड पेंशन स्कीम को फिर से बहाल किया जाएगा। दरअसल, कांग्रेस के ओल्ड पेंशन स्कीम के वादे पर एनपीएस कर्मचारी विश्वास भी जता सकते हैं।

एनपीएस कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष प्रदीप ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने अपनी 10 गर्रंटियों में सबसे पहले ओपीएस को ही प्राथमिकता दी थी।

राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार में पुरानी पेंशन को बहाल करके भी दिखाया है। इसीलिए उन्हें पूरा विश्वास है कि हिमाचल प्रदेश में भी कांग्रेस पार्टी अपने वादे को पूरा करेगी। प्रदीप ठाकुर ने जानकारी देते हुए बताया कि ओल्ड पेंशन स्कीम को लेकर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और पर्यवेक्षक भूपेश बघेल से बात हो चुकी है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह इस बारे में न्यू पेंशन कर्मचारियों को आश्वस्त कर चुके हैं कि उनकी मांग को पूरा किया जाएगा। हिमाचल में न्यू पेंशन कर्मचारी संघ के दौरान जोईया मामा का नारा देने वाले ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि प्रदेश में बीजेपी सरकार ने कर्मचारियों के मुद्दों को हमेशा हल्के में ही लिया जिसका खामियाजा उन्हें इस चुनाव में चुकाना पड़ा। बीजेपी को भी कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा करना भारी पड़ा है। बता दें कि कांग्रेस ने चुनाव से पहले हिमाचल प्रदेश की जनता को 10 गारंटी देने का वादा किया था, जिसमें ओपीएस मुख्य वादा था। जिस तरह से कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ और राजस्थान में पुरानी पेंशन को बहाल किया है उसी तरह हिमाचल के कर्मचारी भी हिमाचल की कांग्रेस सरकार की तरफ उम्मीद लगाए बैठे हैं।

राज्य को पहली बार मिला उपमुख्यमंत्री

शिमला। हिमाचल में नई सरकार बनने के बाद अब प्रदेश को नए मुख्यमंत्री के साथ पहली बार एक उपमुख्यमंत्री भी मिल गया है। मुकेश अग्निहोत्री ने पहले उपमुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। निवर्तमान विधानसभा में विपक्ष के नेता अग्निहोत्री का समायोजन करने के लिए कांग्रेस ने यह कदम उठाया है। वह मुख्यमंत्री पद के लिए प्रबल दावेदारों में से एक थे।

व्यापारियों पर जीएसटी टीमों की छापेमारी के विरोध में उतरा रालोद

कमिश्नर ट्रेड टैक्स को व्यापार प्रकोष्ठ ने सौंपा ज्ञापन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल व्यापार प्रकोष्ठ जीएसटी टीमों की छापेमारी के विरोध में उतर आया है। प्रदेश अध्यक्ष रोहित अग्रवाल ने प्रदेश में व्यापारियों के यहां लगातार हो रही छापेमारी पर कई बिंदुओं को लेकर कमिश्नर ट्रेड टैक्स मिनिस्थी एस को ज्ञापन सौंपा। जिसमें उन्होंने छापेमारी से व्यापारियों में पैदा हुए व्यर्थ के भय और कई मुद्दों को लेकर व्यापारियों का पक्ष रखा है।

कमिश्नर को दिए ज्ञापन में कहा कि पिछले कुछ दिनों से वाणिज्यिक कर विभाग द्वारा प्रदेश के 75 जिलों में जारी छापेमारी जीएसटी प्रावधानों के विरुद्ध है। 40 लाख के टर्नओवर वाले व्यापारियों को स्व रजिस्ट्रेशन की अनुमती के साथ स्व-कर निर्धारण की व्यवस्था है, लेकिन नियमों की अनदेखी कर उनके यहां भी माल को सीज किया जा रहा है। ऐसे में व्यापारियों में भयभीत है। इस तरह की छापेमारी को रुकवाया जाए, ताकि व्यापारियों को राहत मिल सके।

12 परिवारों के 80 लोगों ने इस्लाम छोड़ अपनाया हिंदू धर्म

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले से एक चौंकाने वाला मामला सामने आ रहा है। यहां रविवार रात को करीब 12 परिवारों के 80 सदस्यों ने इस्लाम धर्म छोड़कर हिंदू धर्म में वापसी कर ली। ये सभी रामपुर जिले के रहने वाले हैं।

इनका बघरा ब्लॉक स्थित योग साधना आश्रम के महाराज यशवीर द्वारा गंगाजल से शुद्धिकरण कराकर गायत्री मंत्र उच्चारण के साथ हिंदू धर्म में वापसी कराई गई। हिंदू धर्म में वापसी करने वाले रामपुर निवासी इन लोगों ने सपा नेता आजम खां पर आरोप लगाते हुए कहा है कि 12 साल पहले आजम के द्वारा जबरन उनका धर्म परिवर्तन करवाया गया था। इसके बाद उनके गुर्गों ने जमीन जायदाद भी हड़प ली थी।

अपने-पराये का मोह छोड़ जिताऊ प्रत्याशी के चयन पर हो मंथन

बैठक कर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने चुनाव पर लिया फीडबैक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। महापौर, अध्यक्ष की सीटों और वार्डों के आरक्षण की अधिसूचना जारी होने के बाद भारतीय जनता पार्टी ने निकाय चुनाव की तैयारियों को तेज कर दिया है। निकाय चुनाव को लेकर प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी, महामंत्री (संगठन) धर्मपाल और सह प्रभारी सत्यकुमार की मौजूदगी हुई बैठक में बूथ प्रबंधन, प्रत्याशी चयन से लेकर उसे जीताने तक की रणनीति पर पार्टी में चर्चा की गई।

बैठक में प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि निकाय चुनाव जीतने के लिए पार्टी पदाधिकारी अपने-पराये का मोह छोड़कर जिताऊ उम्मीदवारों का चयन करें। उन्होंने कहा हम भी किसी को टिकट देने का वादा नहीं कर रहे हैं, तो पदाधिकारी किसी भी दावेदार को टिकट दिलाने का आश्वासन न दें। पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में क्षेत्र, मंडल और जिला प्रभारियों व पदाधिकारियों के साथ हुई अलग-अलग बैठकों में सहयोगी दलों से समन्वय बनाकर निकाय चुनाव की तैयारियां करने पर जोर देते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि चुनाव के लिए बूथ समिति, मंडल समिति और सेक्टर कमिटी को मजबूत किया जाए और इन समितियों में क्षेत्र की सभी जातियों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा की केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा लोककल्याण के लिए किए गए कार्यों और सम्पर्क, संवाद, समन्वय, सामंजस्य एवं सामूहिकता की नीति के आधार पर पार्टी निकाय चुनाव लड़ेगी। 18 दिसंबर तक संगठनात्मक कार्यों एवं नगर निकाय चुनावों को लेकर क्षेत्र एवं जिला स्तर पर बैठकें आयोजित करेगी।

» भूपेन्द्र चौधरी ने कहा- केन्द्र और राज्य सरकार की लोककल्याण नीतियों और कार्यों के आधार पर निकाय चुनाव लड़ेगी भाजपा

चौधरी ने कहा लोकसभा चुनाव के पहले हो रहे निकाय चुनाव महत्वपूर्ण हैं। इसलिए निकाय चुनावों में पार्टी की जीत सुनिश्चित कराने जुटें। उन्होंने कहा कि निकाय चुनाव के लिए जल्द ही अधिसूचना जारी हो सकती है, इसलिए सभी लोग संगठन की तय योजनानुसार महापौर, पालिका व पंचायत के अध्यक्ष और पार्षद पद के उम्मीदवारों के चयन की तैयारियां पूरी कर लें। उन्होंने कहा कि चुनाव में एक-एक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी सौंपकर रणनीति तैयार की जाए। बैठक में तय किया गया कि 13 सदस्यीय स्क्रीनिंग कमेटी बनेगी। यही कमेटी महापौर, अध्यक्ष और पार्षद प्रत्याशियों का चयन करेगी।

संगठन की मजबूती के लिए करूंगा हरसंभव प्रयास: अखिलेश प्रसाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। अखिलेश प्रसाद सिंह ने बिहार प्रदेश कांग्रेस समिति के प्रमुख के रूप मं कार्यभार संभाला। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को आश्वासन दिया कि संगठन को मजबूत करने के लिए वह हरसंभव प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं का सम्मान उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने यहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं और समर्थकों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं अपनी पार्टी का आभारी हूं कि उसने मेरे जैसे एक साधारण कार्यकर्ता को कांग्रेस की बिहार इकाई का अध्यक्ष बनाया।

अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि मैं अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं को विश्वास दिलाता हूं कि मैं संगठन को मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास करूंगा। उन्होंने भारत जोड़ो यात्रा शुरू करने के लिए पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि इससे कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

प्रदेश अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति के बाद पहली बार पटना पहुंचे अखिलेश सिंह का जोरदार स्वागत किया गया। कांग्रेस कार्यकर्ता एयरपोर्ट के बाहर एकत्र हो गए और वे पार्टी के झंडे लहराते और ढोल बजाते देखे गए। नेहरू पार्क में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

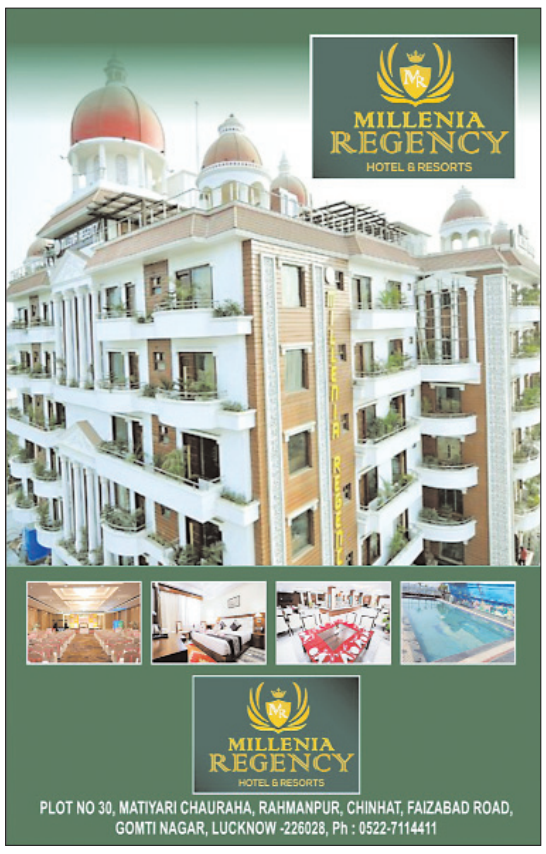

निकाय चुनाव में बेहतर प्रदर्शन अखिलेश के सामने बड़ी चुनौती

महानगरों में सरकार बनाने में नाकाम रही रही है सपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मैनपुरी उपचुनाव में ऐतिहासिक जीत और खतौली विधानसभा को भाजपा से छीनने के बाद अब समाजवादी पार्टी काफी उत्साहित है। यूपी उपचुनाव में सपा का प्रदर्शन अच्छा ही कहा जाएगा, बस रामपुर में मिली हार उसे कुछ सोचने पर मजबूर जरूर करेगी। जो कि कहीं न कहीं जरूरी भी है। इसके अलावा चाचा और भतीजे के एकसाथ आ जाने से भी सपा की डोर प्रदेश की राजनीति में मजबूत ही हुई है। ऐसे में सपा को उम्मीद है कि उसका ये प्रदर्शन प्रदेश में होने वाले नगर निकाय चुनाव में भी जारी रहेगा। समाजवादी पार्टी इस बार के निकाय चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंकेगी। ऐसे में पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव अभी से ही अपनी रणनीति पर विचार करना शुरू कर देंगे। जानकारी ये भी है कि अखिलेश अगले सप्ताह ही नगर निकाय चुनाव को लेकर बैठ कर विधिवत रणनीति तैयार करेंगे। इस बार के निकाय चुनाव सपा के लिए इस नजरिए से भी काफी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि पिछले दो निकाय चुनावों से समाजवादी पार्टी के खाते में एक भी मेयर की सीट नहीं आई है। ऐसे में उपचुनाव में मिली सफलता, चाच शिवपाल का साथ और अखिलेश-जयंत व चंद्रशेखर की नई सोशल इंजीनियरिंग के सहारे सपा इस बार के निकाय चुनाव में सफलता हासिल करना चाहेगी और एक बेहतर रणनीति के सहारे उतरेगी।

कभी प्रदेश में हाशिये पर रहने वाली भाजपा अब प्रदेश की सबसे बड़ी व प्रमुख पार्टी बन चुकी है। कहीं न कहीं ये भी सत्य है कि भाजपा के प्रदेश में बढ़ने के बाद ही समाजवादी पार्टी को राज्य की राजनीति में नुकसान होना शुरू हुआ है। ये बात जरूर है कि सपा परिवार का विघटन और आपसी कलह भी सपा के इस खस्ता हाल के लिए जिम्मेदार हैं।

हालांकि, अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि शिवपाल के साथ आने से परिवार एक बार फिर एकजुट हुआ है और इसी का फायदा मैनपुरी उपचुनाव में भी मिला है। वैसे इस जीत में काफी हद तक श्रेय स्वर्गीय नेताजी मुलायम सिंह यादव का भी है। क्योंकि ये उनकी पुश्तैनी सीट है और वो अपने अंतिम समय में भी यहां से ही सांसद थे। ऐसे में इस जीत में डिंपल को मिला वोट कहीं न कहीं अपने जमीनी नेता के जाने के गम में डूबी जनता का सिम्पैथी वोट भी है। ऐसे में सिर्फ इस जीत से ही सपा को राहत नहीं मिलने वाली है, क्योंकि निकाय चुनाव में सपा के लिए हमेशा से मुसीबत रही है। फिर चाहे वो 2012 के निकाय चुनाव रहे हों या 2017 के, सपा को दोनों में ही मेयर की एक भी सीट नसीब नहीं हुई है। ऐसे में समाजवादी पार्टी इस निकाय चुनाव में एक नए हौसले, नई उम्मीद और नई सोशल इंजीनियरिंग के साथ उतरने को तैयार है।

पिछले दो चुनाव में नहीं जीत पाए मेयर की एक भी सीट

कभी शहरी पार्टी के तौर पर पहचानी जाने वाली भाजपा ने अब ग्रामीण इलाकों में भी अपनी मजबूत पैठ बना ली है, जो भी कहीं न कहीं समाजवादी पार्टी के लिए ही चिंता की बात है। वहीं, सपा के लिए वैसे भी शहर में सरकार बनाना हमेशा एक चुनौती रही है। अगर 2006 के निकाय चुनाव की बात करें तो, उस समय नेताजी के नेतृत्व वाली सरकार में हुए निकाय चुनाव में सपा सिर्फ एक सीट जीत पाई थी। 2012 में जब अखिलेश यादव की सरकार में निकाय चुनाव हुए, तो सपा का मेयर के पद पर खाता तक नहीं खुला। 10 सीटें भाजपा के खाते में गईं और 2 सीटों पर निर्दलीय जीते। वहीं पिछले नगरीय निकाय के चुनावों में भी मेयर की 14 सीटें भाजपा और 2 सीट बसपा के खाते में गई और सपा खाली हाथ रही। इसलिए, अब अखिलेश यादव के सामने नगरीय निकायों में पार्टी के प्रदर्शन का इतिहास बदलने की चुनौती है।

नए समीकरणों ने अबके बढ़ाई उम्मीदें

लंबे समय के बाद जीत का स्वाद चखने वाली सपा को उपचुनाव में सधे समीकरणों ने भी उम्मीद दी है। मसलन, मुलायम सिंह यादव की गैर-मौजूदगी में मैनपुरी का जातीय गणित चुनाव में उभरता नजर आ रहा था। गैर-यादव ओबीसी, अगड़े व दलित वोट वहां सपा के परंपरागत वोटों के लगभग दोगुने थे। इसी के भरोसे भाजपा ने मैनपुरी में सेंधमारी की उम्मीद लगाई थी। लेकिन वह लड़ाई में भी खड़ी नहीं हो सकी। इससे इतर सपा ने अपने कोर वोटरों को संभालने के साथ ही सभी जातियों में सेंध लगाई। यहां तक कि पिछले दो चुनाव में जिस भोगांव विधानसभा को मुलायम तक नहीं जीत सके थे, वहां भी इस बार साइकल दौड़ी। कमोबेश यही स्थिति खतौली की भी रही। इसलिए, सपा को लग रहा है कि निकाय चुनाव में भी वह अपना वोट बेस बढ़ाकर बेहतर नतीजा हासिल करने में सफल होगी।

पारिवारिक एकता से सपाई उत्साहित

अब जब चाचा और भतीजा एक साथ आ गए हैं, तो सपाइयों में भी ये साफ हो गया है कि पार्टी में सबकुछ ठीक है। ऐसे में एक बार फिर पारिवारिक एका भी पार्टी के लिए सकारात्मक संकेत है। शिवपाल यादव के तरफ बढ़ा एका का हाथ भी उनमें से एक था। यह प्रदर्शन महज संयोग नहीं है बल्कि सफल रणनीति का हिस्सा है, निकाय चुनाव में सपा यह साबित करने की कोशिश करेगी। इसलिए, पार्टी के सभी जिम्मेदारों को अब शहरी निकाय के चुनाव में पूरी ताकत से लगने को कहा गया है।

हिमाचल में कांग्रेस के काम आया भूपेश का कौशल

» पर्यवेक्षक के तौर पर लड़ाया चुनाव, कांग्रेस में बढ़ सकता है कद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में मिली शानदार जीत कहीं न कहीं कांग्रेस के लिए काफी राहत देने वाली रही है। हिमाचल में कांग्रेस चुनावों में शुरूआत से ही काफी मजबूत नजर आ रही थी। हालांकि, परिणामों में शुरूआत में जरूर भाजपा ने कुछ देर कड़ी टक्कर दी, मगर बाद में परिणाम अंततः कांग्रेस के खाते में गया। कांग्रेस को मिली इसी जीत का श्रेय काफी हद तक हिमाचल के प्रभारी बनाए गए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को भी जाता है। हिमाचल के परिणाम सामने आने के बाद से लगातार भूपेश बघेल की कुशल सियासी रणनीति को कांग्रेस की इस सफलता की प्रमुख वजह बताया जा रहा है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ की भानुप्रतापपुरा विधानसभा उपचुनाव में भी कांग्रेस की शानदार जीत हुई। जो निश्चित ही भूपेश बघेल के नेतृत्व में ही लड़ा गया था। इन दोनों जीतों के साथ ही भूपेश बघेल कांग्रेस आलाकमान की नजरों में काफी फेमस हो गए हैं और हों भी क्यों न, आखिर ये भूपेश बघेल की कुशल सियासी रणनीति का ही नतीजा है कि हिमाचल में सत्ता में होने के बाद भी भाजपा का कोई भी दांव सफल नहीं हो सका और कांग्रेस ने बीजेपी के कब्जे से हिमाचल प्रदेश को छीन लिया।

कांग्रेस हाईकमान की ओर से पार्टी के नए जोशीले नेता और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को हिमाचल को अपने कब्जे में लेने के लिए राज्य का पर्यवेक्षक बनाया गया था। छत्तीसगढ़ में भूपेश के सफल कार्यकाल और उनके कामों को देखकर पार्टी ने उन पर भरोसा जताया था। ऐसे में भूपेश बघेल के सामने भी हिमाचल में पार्टी के अच्छे प्रदर्शन का दबाव थी। मगर हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कान रखने वाले भूपेश बघेल ने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। यही वजह रही कि हिमाचल की जिम्मेदारी मिलते ही भूपेश बघेल एक्टिव हो गए थे। भूपेश के सियासी समझ और तेज रणनीति ने ही कांग्रेस को राज्य में भाजपा से एक कदम आगे रखा। इसका नतीजा भी कांग्रेस को अपने हक में मिला और पार्टी ने शानदार जीत हासिल कर पांच साल बाद फिर से अपनी सरकार बनाई है।

कांग्रेस के लिए कोई करिश्मा नहीं कर सके अशोक

अब दोनों राज्यों के चुनाव नतीजे सामने आ चुके हैं। गुजरात में अशोक गहलोत की रणनीति काम नहीं आई और कांग्रेस को बीजेपी से बुरी तरह हार मिली। गुजरात चुनाव में रघु शर्मा प्रदेश प्रभारी बनाए गए थे, जबकि गहलोत सीनियर ऑब्जर्वर की भूमिका में थे। गुजरात चुनाव में 182 सीटों में से कांग्रेस के खाते में केवल 17 सीटें आईं। जबकि पिछले चुनाव में कांग्रेस को यहां 16 सीटों की बढ़त भी मिली थी। लेकिन इस बार के नतीजे कांग्रेस के लिए बहुत की निराशाजनक हैं।

पार्टी के लिए निभाई बेहतर रणनीतिकार की भूमिका

वहीं, दूसरी ओर हिमाचल में सीएम भूपेश बघेल की रणनीति काम कर गई। हिमाचल प्रदेश की 68 सीटों में से कांग्रेस ने 40 सीटों पर शानदार जीत करते हुए सत्ता में वापसी तय कर दी। यहां बीजेपी को केवल 25 सीटें मिली। जबकि कांग्रेस का विकल्प बनने का ख्वाब देख रही आम आदमी पार्टी का खाता भी नहीं खुला। वहीं जीत के बीच हॉर्स ट्रेडिंग के डर से सीएम बघेल ने हिमाचल में डेरा भी डाल दिया।

गहलोत से आगे निकल गए बघेल

कांग्रेस ने जो घोषणा पत्र हिमाचल के लिए बनाया था, वो भूपेश बघेल की जनहितकारी योजना को ध्यान में रखकर बनाया गया था। कांग्रेस ने युवाओं को 5 लाख नौकरी के साथ महिलाओं को हर महीने 1500 रुपये और पहली कैबिनेट बैठक में 1 लाख लोगों को रोजगार देने का वादा किया, वो हिमाचल में काम कर गया। अब देखा जाए तो भूपेश बघेल कांग्रेस पार्टी में अशोक गहलोत और सचिन पायलट से बहुत आगे हो गए हैं। भूपेश बघेल के लिए बूस्टर का काम हिमाचल से आए नतीजों ने किया है। दरअसल, दो राज्य गुजरात और हिमाचल में विधानसभा का चुनाव था। दोनों राज्यों में बीजेपी की सरकार। कांग्रेस के सामने दोनों राज्यों में सत्ता में वापसी की चाहत। इस चाहत के चलते कांग्रेस ने अपने दो राज्यों छत्तीसगढ़ और राजस्थान के धुरंधर सीएम पर दांव लगाया। कांग्रेस ने सियासत के जादूगर कहे जाने वाले राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत को गुजरात का सीनियर ऑब्जर्वर बनाया। वहीं, हिमाचल की जिम्मेदारी छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल को दी। दोनों सीएम की खासियत पर कांग्रेस पार्टी को भरोसा था कि वो बीजेपी की काट ढूंढ कर चुनाव के नतीजे हाथ में डाल देंगे। दरअसल, दोनों राज्यों छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बीजेपी को हटाकर कांग्रेस सत्ता में आई थी। ऐसे में पार्टी ने भरोसा करते हुए गहलोत और बघेल को क्रमश गुजरात और हिमाचल की जिम्मेदारी दी।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

जरूरी है आबादी पर नियंत्रण

हम दो-हमारे दो, छोटा परिवार-सुखी परिवार, बढ़ती जो आबादी है-देश की बर्बादी है। ये ऐसे नारे हैं जो भारत में बढ़ती जनसंख्या के मद्देनजर लोगों में जागरूकता लाने के लिए समय-समय पर सरकार एवं समाजसेवी संस्थाओं ने दीवारों पर लिखकर या फिर विज्ञापनों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का काम जारी रखा। नि:संदेह इन नारों का कुछ असर भी हुआ होगा, लेकिन कुल मिलाकर परिणाम यह हुआ कि आजादी के बाद की 34 करोड़ की जनसंख्या वर्तमान में 139 करोड़ को पार कर चुकी है। भारत भले ही विकास के पथ पर तीव्र गति से चल रहा हो लेकिन ये सफर किसी भी सूरत में आसान नहीं है। तमाम बैरियर्स हैं जिनका सामना एक राष्ट्र के रूप में भारत को करना पड़ रहा है। जनसंख्या एक ऐसा ही मसला है। भले ही जनसंख्या के मुद्दे पर जनता लचर रवैया अपनाते हुए बच्चों को अल्लाह की नेमत, भगवान की सौगात मान रही हो लेकिन सरकार की सोच ऐसी नहीं है। बढ़ी हुई जनसंख्या को लेकर सरकार का एजेंडा क्लियर है। लेकिन सवाल ये है कि क्या वाकई जनसंख्या नियंत्रण के लिए किसी पार्टी या बिल की जरूरत है? जवाब है नहीं। क्योंकि ये समस्या लोगों से जुड़ी हुई है तो लोगों को खुद इस विषय में सोचना होगा।

आने वाले कुछ वर्षों में हम चीन को पछाड़कर विश्व के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश के रूप में होंगे, जबकि हमारा कुल क्षेत्रफल चीन के क्षेत्रफल का एक तिहाई भी नहीं है। अगर इसी रफ्तार से जनसंख्या बढ़ती रही तो अगले 10 से 12 साल में हमारी जनसंख्या 1.5 अरब को पार कर जाएगी। कह सकते हैं कि अब वो वक्त आ गया है जब जनता को खुद तय करना है कि आज जब महंगाई आसमान छू रही हो आम आदमी को मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल पा रही हों क्या वाकई हमें एक से अधिक बच्चे पैदा करने की जरूरत है। विषय बहुत सीधा है। भले ही आज जनसंख्या नियंत्रण के लिए रवि संसद में प्राइवेट बिल जा रहे हों। लेकिन अगर बिल वाकई चाहिए तो लोगों को अपने घर में चाहिए। वक्त आ चुका है जब जनसंख्या नियंत्रण के लिए लोगों को खुद अपने अपने घरों में पहल करनी होगी। साथ ही अपने से जुड़े लोगों को इसके विषय में जागरूक करना होगा। हम फिर इस बात को कह रहे हैं कि बढ़ी हुई जनसंख्या का मुद्दा कोई छोटा या नजरअंदाज करने वाला मुद्दा नहीं है। जनसंख्या एक समस्या है और इस समस्या का समाधान तब ही है जब हम स्वयं इसके प्रति गंभीर हों। संसद में लाख बिल बन जाएं। कितनी ही विस्तृत संगोष्ठियां क्यों न हो जाएं लेकिन बात तब है जब इसकी शुरुआत हम अपने घरों से करें और इस बात को समझें कि संसाधन बहुत लिमिटेड हैं। ये सभी तक तभी पहुंच पाएंगे जब हम हिसाब किताब से रहें। अब देखना दिलचस्प रहेगा कि देश की जनता इन बातों से सहमत होती और एक राय रखती है या नहीं।

भले ही जनसंख्या के मुद्दे पर जनता लचर रवैया अपनाते हुए बच्चों को अल्लाह की नेमत, भगवान की सौगात मान रही हो लेकिन सरकार की सोच ऐसी नहीं है। बढ़ी हुई जनसंख्या को लेकर सरकार का एजेंडा क्लियर है। लेकिन सवाल ये है कि क्या वाकई जनसंख्या नियंत्रण के लिए किसी पार्टी या बिल की जरूरत है? जवाब है नहीं। क्योंकि ये समस्या लोगों से जुड़ी हुई है तो लोगों को खुद इस विषय में सोचना होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

विपक्ष के लिए सबक है गुजरात का संदेश

शंभूनाथ शुक्ल

लगातार 27 साल से गुजरात में राज कर रही भाजपा ने फिर से फ़तेह हासिल कर ली है। उसने राज्य की 86 प्रतिशत से अधिक सीटें प्राप्त की हैं। कुल 182 सीटों वाली विधानसभा में उसे 156 सीटें मिली हैं। सबसे बड़ी बात तो यह कि ओबीसी, दलित और आदिवासी के अतिरिक्त मुसलमानों का वोट भी उसे थोक में मिला है। गुजरात के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि किसी एक पार्टी ने राज्य विधानसभा में 86 प्रतिशत सीटें अपनी झोली में डाल ली हों। उसे 52.5 प्रतिशत वोट मिले हैं और इस भारी सफलता का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को जाता है। इसके पहले 1985 में कांग्रेस ने 149 सीटें पाई थीं। तब मुख्यमंत्री माधव सिंह सोलंकी ने खाम फ़ार्मूला बनाया था, जिसके तहत क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी और मुसलमान को कांग्रेस के साथ लाया गया था। मगर आज वही कांग्रेस मात्र 17 सीटों पर तक सिमट गई है, जबकि अभी पिछली विधानसभा में कांग्रेस ने भाजपा की राह में अवरोध खड़ा कर दिया था। हालांकि तब भी सरकार भाजपा की बन गई थी। मगर उसके खाते में कुल 99 सीटें गई थीं यानी बहुमत से बस सात अधिक।

लेकिन कांग्रेस के लिए यह संतोष की बात है, कि उसने हिमाचल की कुल 68 विधानसभा सीटों में से 40 सीटें लेकर बहुमत साबित कर दिया है। कांग्रेस की कमान यहां प्रियंका गांधी ने खुद संभाली हुई थी तथा पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह भी खूब सक्रिय रहीं। इसके अतिरिक्त पार्टी के बड़बोले नेता गुजरात में रहे और हिमाचल वे लोग आए जो अपेक्षाकृत नरम और संजीदा समझे जाते हैं। वहां पर कांग्रेस ने अपनी रणनीति भी बहुत चातुर्य के साथ बनाई थी। यहां कांग्रेस व्यक्तिगत हमले करने से बचती रही और सफ़ाई के साथ वह भाजपा की कमियों को उजागर करती रही। कांग्रेस के मौजूदा अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ऐसे ही नेताओं में हैं, शायद यही उसकी सफलता का राज रहा। उधर, भाजपा की अंतर्कलह के चलते भी यहां भाजपा के बाग़ियों ने उसका खेल बिगाड़ दिया।

इस प्रांत से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा हैं और सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर भी। इसके

अतिरिक्त यहां भाजपा के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का गुट भी था। और इस गुटबाज़ी को मैनेज करने में भाजपा का स्थानीय नेतृत्व विफल रहा। लेकिन गुजरात की हार कांग्रेस के सफ़ाये का संकेत कर रही है। जिस राज्य में कांग्रेस भाजपा के समानांतर खड़ी हुआ करती थी, और जिसने 1995 के पूर्व लंबे समय तक वहां राज किया, वहां पर कांग्रेस की यह स्थिति चिंतनीय है। मालूम हो कि गुजरात में कोई क्षेत्रीय दल नहीं है। वहां लड़ाई भाजपा बनाम कांग्रेस ही होती आई है, वहां से कांग्रेस इस दुर्गति को पहुंची कैसे? एक तरफ़ राहुल गांधी की पद यात्रा तो दूसरी तरफ़ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कांग्रेस मुक्त देश करने की योजना। जो स्थितियां बनी हैं, उनसे यही लगता है कि नरेंद्र मोदी का प्रण अधिक ठोस दिख रहा है। जबकि राहुल गांधी की पद यात्रा कोई प्रभाव नहीं छोड़ पा रही। यह अजीब बात है क्योंकि भारत की जनता सदैव सरकार के विरोध में खड़ी होती रही है। मगर इस बार तो कांग्रेस का गुजरात में ऐसा सूपड़ा साफ़ हुआ, कि अब लगता नहीं कि कांग्रेस भविष्य में कभी गुजरात में उसी मज़बूती के साथ खड़ी हो पाएगी। इसकी एक वजह तो कांग्रेस के अंदर से परंपरागत मध्यममार्गी और उदारवादी नेताओं को साइड ट्रैक करते जाना है। नतीजा यह है, कि कांग्रेस में आज व्यक्तिगत हमले करने वाले नेता तो बहुत हैं, लेकिन न कोई पब्लिक मीटिंग को संबोधित करने में सक्षम है न ही उनमें मोदी को काउंटर करने की क्षमता है। वे सरकार और जनता पर भी हमले करते हैं। बहुसंख्यक जनता को अपने हमलों से आहत करते हैं। संभव है, भाजपा के कुछ समर्थक अतिवादी हों, मुस्लिम द्वेषी हों। लेकिन उसके लिए पूरी हिंदू जनता को उग्रवादी घोषित कर देना अथवा सरकार को अतिवादी बता देना तो कोई हल नहीं है। कोई भी उदारवादी नेता ऐसे मामलों में मध्यम मार्ग अपनाकर इनको इग्नोर करता। भाजपा की इस जीत ने यह भी बता दिया है, कि फ़िलहाल नरेंद्र मोदी के समक्ष खड़े होने की क्षमता किसी में नहीं है। ऐसा लगता है, कि विपक्ष स्वयं पीएम नरेंद्र मोदी की पिच पर खेल रहा है।

चुनावों के जनादेश ने तय की आगे की राजनैतिक दिशा

ललित गर्ग

भारत के दो राज्यों गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश और एक नगर निगम दिल्ली के चुनावों में इन क्षेत्रों के मतदाताओं ने जो जनादेश दिया है उससे एक बार फिर सिद्ध हो गया है कि भारत में लोकतंत्र कायम है और इसकी जीवंतता के लिये मतदाता जागरूक है। मतदाता को ठगना या लुभाना अब नुकसान का सौदा है। गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने कीर्तिमान गढ़े, तो हिमाचल में कांग्रेस ने नया जीवन पाया, दिल्ली में आम आदमी पार्टी को खुश होने का मौका मिला। इन चुनावी नतीजों ने जाहिर कर दिया कि आज के मतदाता किसी भी पार्टी के दबाव में नहीं हैं। ये नतीजे जहां लोकतंत्र की सुदृढ़ता को दर्शा रहे हैं, वहीं देश की राजनीति का नई राहों की ओर अग्रसर होने के संकेत दे रहे हैं। इन चुनाव नतीजों से यह तय हो गया कि भारत विविधता में एकता एवं विभिन्न फूलों का एक 'खूबसूरत गुलदस्ता' है।

इन जनादेशों का चारों तरफ स्वागत हो रहा है। ऐसे जनादेश का केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही महत्त्व नहीं है, इसका सामाजिक क्षेत्र में भी महत्त्व है। जहाँ राजनीति में मतों की गणना को जनादेश कहते हैं, वहां अन्य क्षेत्रों में जनता की इच्छाओं और अपेक्षाओं को समझना पड़ता है। जनादेश और जनापेक्षाओं को ईमानदारी से समझना और आचरण करना सही कदम होता है और सफलता सही कदम के साथ चलती है। भारत के लोगों ने इस देश की बहुदलीय राजनैतिक व्यवस्था के औचित्य को न केवल स्थापित किया है बल्कि यह भी सिद्ध किया है कि मतदाता ही लोकतन्त्र का असली मालिक होता है। एक दिन का राजा ही हमेशा वाले राजा से बड़ा होता है।

कहने को भले ये दो राज्यों के विधानसभा एवं दिल्ली के नगर निगम के चुनाव थे, लेकिन ये चुनाव ज्यादा महत्वपूर्ण एवं उत्साह वाले इसलिये बने कि इन्हीं चुनावों को 2024 के लोकसभा चुनावों से जोड़कर देखा जा रहा था। उस लिहाज से निस्संदेह गुजरात में बीजेपी को मिली ऐतिहासिक जीत बहुत बड़ी है और बहुत कुछ बयां कर रही है। पिछले यानी 2017 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी को कांग्रेस ने कड़ी टक्कर दी थी। तब 268 विधायकों वाली विधानसभा में उसे 99 सीटें आई थीं, जो सरकार गठन के लिए आवश्यक संख्या 95 से मात्र चार ज्यादा थीं। स्वाभाविक रूप से माना जा रहा था कि अगर कांग्रेस थोड़ा और जोर लगा दे या बीजेपी थोड़ी-सी लापरवाही दिखा दे तो चुनाव में उलटफेर हो सकता है। लेकिन न तो कांग्रेस ज्यादा जोर लगा पाई और न ही बीजेपी ने कोई चूक दिखाई। उसने अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ डाले, माधवसिंह सोलंकी के समय कांग्रेस के 149 सीटों से जीत के रिकार्ड को भी उसने तोड़ डाला। यह एक पहेली ही है कि कांग्रेस ने पूरे दम-खम से गुजरात चुनाव क्यों नहीं लड़ा और उसके सबसे प्रभावी नेता राहुल गांधी ने वहां केवल दो रैलियां ही संबोधित क्यों कीं? गुजरात चुनाव से ज्यादा भारत जोड़ो यात्रा को प्राथमिकता देना कोई राजनीतिक परिपक्वता की निशानी नहीं है।

निश्चित ही भाजपा ने इस राज्य में नया इतिहास रच डाला और 54 प्रतिशत वोट प्राप्त करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। एक बार फिर यह साबित हुआ कि इस प्रांत में नरेन्द्र मोदी का वर्चस्व कायम है। तमाम आलोचनाओं के बावजूद इन नतीजों ने साबित किया कि मोदी आज भी राज्य के सबसे लोकप्रिय और बड़े नेता हैं। यहां की जनता विकास पर वोट डालती है न कि मुफ्त की सुविधाओं के झांसे में आती है। भाजपा की जीत का अर्थ निश्चित ही सुशासन भी है और इससे राज्य के लोगों के कल्याण व विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। इसी की अपेक्षा के लिये जनता ने एकतरफा वोट डाले। सभी राजनैतिक दलों को सोचना होगा कि केवल चुनावी समय में जनता को लुभाने के लिए मुफ्त की सौगातें देने का लोकतन्त्र पर क्या असर पड़ सकता है। विशेषत: आप जैसी पार्टी को मुफ्त की खैरात बांटने की अलोकतांत्रिक सोच से उबरना चाहिए। गुजरात के मतदाताओं ने राज्य में पिछले 27 वर्षों से चल रही हुकूमत को ही पुन: अवसर देने का फैसला करके यह भी संकेत दिया है कि काम करने वाले दलों को मतदाता सिर माथे बिठाती ही है। भारतीय राजनीति के इतिहास को देखें, तो किसी पार्टी को किसी राज्य में इतने मौके मिलना या इतने लम्बे समय तक राज करने देना बहुत खास है। वामपंथी पार्टियां बंगाल में लगातार 34 वर्षों तक सरकार चलायी है, इस रिकॉर्ड को तोड़ने के लिये भाजपा अगली बार भी निश्चित ही जीत हासिल करके नया चमत्कार घटित करेंगी। बंगाल एवं ओडिशा की ही भांति गुजरात ने राजनीति को एक नई दिशा दी है और वह है कि राजनीतिक चालें शुद्ध विकास एवं स्वस्थ लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़कर ही लम्बा जीवन पा सकती हैं।

लोकतन्त्र की खासियत इसी बात में है कि मतदाता हर पांच वर्ष बाद अपनी विकास की बात करने वाले एवं स्वस्थ मूल्यों के धारकों को उनकी काबिलियत के मुताबिक चुनता है। गुजरात में मतदाताओं को लगा कि भाजपा का शासन उनके लिए ठीक है अत: उसने इस बात की परवाह किये बिना पुन: इस पार्टी को चुना कि वह पिछले सात चुनावों से लगातार जीतती आ रही है जबकि हिमाचल में उसने भाजपा के शासन को नाकारा समझा अत: उसे बदल डाला।

फ्रिज में रखने से उड़ जाती है महक

कुछ ऐसी चीजें हैं जो फ्रिज में फ्रेश रहने की जगह होने लगती हैं खराब

आपके साथ भी ऐसा जरूर होता होगा कि आप मार्किट जाकर एक बार में ही ढेर सारी फल सब्जियां खरीद कर ले आते हैं और फ्रिज में रख देते हैं। फ्रिज में रखने के बावजूद सब्जियां दो दिन में ही मुरझा जाती है। हम चीजों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए उन्हें फ्रिज में रखते हैं लेकिन कुछ ऐसी चीजें हैं जो फ्रिज में फ्रेश रहने की जगह खराब होने लगती है। आज जानते हैं कि ऐसी कौन सी चीजें हैं जिन्हें फ्रिज में रखने से स्वाद और महक खत्म हो जाता है और खराब भी होने लगती है।

आलू

आपने ये नोटिस किया होगा कि फ्रिज में रखे आलू का स्वाद दूसरे आलू की तुलना में अलग है। दरअसल फ्रिज में रखने से आलू का स्टार्च चीनी में बदलने लगता है और यही आलू के स्वाद को बदल देता है। आलू को धूप में भी ना रखें। आप किचन में आलू के लिए स्थान बना लें जहां सामान्य तापमान हो। आप इन्हें प्लास्टिक की थैली से बाहर निकाल कर रखें।

प्याज

कई लोग फ्रिज में प्याज रख देते हैं। इससे फ्रिज तो प्याज से महकने लगता ही है, वहीं दूसरी तरफ रेफ्रीजरेटर में मौजूद नमी की वजह से प्याज मुलायम भी हो जाते हैं। गीले हो चुके प्याज को इस्तेमाल में लाना थोड़ा मुश्किल होता है। आप प्याज को सुखी और सामान्य तापमान वाली जगह पर रखें।

टमाटर

याद रखें कि टमाटर धूप में उगने वाली फसल है। वैसे टमाटर को फलों की श्रेणी में रखा जाता है। इन्हें फ्रिज में रखने की भूल ना करें। घर में टमाटर को लंबे समय तक ताजा बनाए रखने के लिए इन्हें फ्रिज में ना रखें।

कॉफी

अगर आप भी उन लोगों में से हैं जो अपना कॉफी पाउडर फ्रिज में रखते हैं तो ऐसा करना आज ही बंद कर दें। कॉफी फ्रिज में रखने से उसकी महक खत्म हो जाती है और आपको उसका स्ट्रांग तथा रिच फ्लेवर भी नहीं मिलेगा।

लहसुन

लहसुन को फ्रिज में रखने से ये अंकुरित हो जाते हैं और थोड़े गल भी जाते हैं। आप इन्हें प्याज के साथ फ्रिज से बाहर ही रखें। इन्हें बहुत ज्यादा धूप या रौशनी में भी ना रखें।

ड्राई फ्रूट्स

सूखे मेवों को फ्रिज में ना रखें। इन्हें कमरे के तापमान में रखना ही बेहतर होता है। इससे ये स्वादिष्ट और सुरक्षित रहते हैं।

ऑलिव ऑयल

ऑलिव ऑयल को फ्रिज में ना रखें। ऐसा करने से ये सख्त होकर मक्खन जैसा हो जाता है।

शहद

शहद को हमेशा फ्रिज में रखना जरूरी नहीं है। अगर आप शहद की बोतल का ढक्कन कसकर बंद करके कमरे के तापमान पर रखें तो भी ये सुरक्षित रहता है।

नींबू

जिन फलों में सिट्रिक एसिड होता है जैसे नींबू, संतरा, मौसंबी आदि को फ्रिज में ना रखें। ये उतनी ठंडक बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं और इस कारण इनके छिलकों पर दाग बन जाते हैं। ज्यादा ठंडे तापमान में रखने के कारण इनके स्वाद में बदलाव आता है और ये सूखने भी लगते हैं।

हंसना मना है

पत्नी: अगर आप लॉटरी से 1 करोड़ रुपये जीत गए और फिर मुझे फिरौती के लिए किडनैप कर लिया गया तो आप क्या करेंगे। पति: सवाल तो ठीक है लेकिन मुझे शक है कि एक ही दिन में मेरी दो बार लॉटरी कैसे लग सकती है।

टीचर: शांति किसके घर में रहती है। पप्पू: जिस घर में पति और पत्नी दोनों मोबाइल चलाते हैं।

अगर बिना बुलावे के किसी शादी में खाने जाओ तो खाने के स्टॉल के आसपास का हर आदमी घर का मालिक लगता है।

हाय रे मेरा दर्दस्कूल टाइम में जो लड़का मुझे छुप-छुपकर देखा करता था आज डॉक्टर बन गया है। अब देखने के भी पैसे लेता है।

सब्र का फल मीठा होता है। इस अफवाह के चक्कर में मेरे 2 सब्र के फलों की शादी हो गई और 1 की कल सगाई हो गई।

एक बात जो आप शायद ही जानते हों, मूली की मां को मामूली कहते हैं।

कहानी — खट्टी-मिट्ठी

एक गांव में एक परिवार रहता था। उसमें दो बहने थी। एक का नाम खट्टी और दूसरी का नाम मिट्ठी था। खट्टी को नृत्य करना अच्छा लगता था जबकि मिट्ठी को गाना गाना और तरह-तरह के वाद्य-यंत्र बजाना। दोनों ही कक्षा चौथी में पढती थीं। संग-संग स्कूल जातीं और खेलती.कूदती। एक छोटी सी बात पर दोनों में झगडा हो गया। खट्टी ने कहा कि मैं नयी पेन्सिल मैं लूंगी। मिट्ठी कहती मैं लूंगी। दोनों के बीच तू-तू, मैं-मैं चल रही थी, तभी उनके पिता आ पहुँचे। दोनों के झगड़ने का कारण जानने के बाद, उन्होंने पेन्सिल के दो टुकड़े करते हुए दोनों के बीच बांट दी। इस तरह झगड़ा शांत हुआ। एक बार दोनों ने अपनी माँ से प्रश्न किया कि उनका नाम मिट्ठी और खट्टी क्यों रखा गया। तब माँ ने समझाते हुए कहा, मिट्ठी को मीठा खाने का शौक था, जबकि खट्टी को तीखा। इसलिए दोनों के नाम खट्टी-मिट्ठी रख दिए गए। जैसे-जैसे वे बड़ी होती गईं, अपनी-अपनी कलाओं में पारंगत होती चली गईं। खट्टी नृत्य करती और मिट्ठी गाने गाती और संगीत में अनूठी प्रस्तुति देती। देखते ही देखते वे सितारा आर्टिस्ट बन गईं खट्टी को इस बात पर गर्व होता कि उसके मुकाबले कोई नहीं। एक बार तो उसने अपनी छोटी बहन का उपहास उड़ाते हुए कहा, मेरे समान नर्तकी दुनिया में नहीं है। अपनी बहन की बातें सुनकर मिट्ठी को बहुत बुरा लगा। उसने समझाते हुए कहा, घमंड करना ठीक नहीं है। नृत्य हो अथवा गायिकी, ये सब ईश्वर की देन होती है। अत: हमें अपनी कला को भगवान को समर्पित करते हुए उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। किसी भी बात पर घमंड करना अनुचित है। अपनी बहन की बातें सुनकर खट्टी को बहुत बुरा लगा। बात यहाँ तक आगे बढ़ गई कि वे अकेले रहने लगीं। मिट्ठी प्रतिदिन अपना रियाज करती और बुलावा आने पर वह अपना कार्यक्रम देने पहुँच जाती। जबकि खट्टी ने नृत्य का अभ्यास करना तक छोड़ दिया था। वह दिन भर अपने कमरे में पड़ी रहती। एक दिन ऐसा भी आया कि वह बीमार रहने लगी। अपनी बहन की दुर्दशा देखकर मिट्ठी को दुख होता, लेकिन वह कर भी क्या सकती थी। एक दिन उचित अवसर जानकर, अपनी बहन से कहा कि देखो, तुम एक श्रेष्ठ नर्तकी हो और तुम्हें चाहिए कि तुम अपना अभ्यास शुरु करो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हारे लिए नया संगीत रचूगीं और तुम फिर से अपना खोया हुआ सम्मान पा सकोगी। खट्टी ने क्षमा मांगते हुए अपनी बहन से कहा, बहन तुम सच कह रही हो। मुझे अपने किए पर पछतावा हो रहा है। भविष्य में ऐसा कभी नहीं होगा। मिट्ठी ने अपनी प्यारी बहन को गले से लगाते हुए कहा कि मुझे इस बात पर खुशी हुई कि तुमने अपनी गलती स्वीकार कर ली है।

5 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। परीक्षा आदि में सफलता मिलेगी। पारिवारिक कष्ट एवं समस्याओं का अंत संभव है।

वृषभ शत्रु सक्रिय रहेंगे। कुसंगति से हानि होगी। व्ययवृद्धि होगी। लेन-देन में सावधानी रखें, जोखिम न लें। किसी शुभचिंतक से मेल-मुलाकात का हर्ष होगा।

मिथुन यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। डूबी हुई रकम प्राप्त होगी। आय में वृद्धि होगी। प्रमाद न करें। आकस्मिक लाभ व निकटजनों की प्रगति से मन में प्रसन्नाता रहेगी।

कर्क कार्यस्थल पर परिवर्तन लाभ में वृद्धि करेगा। योजना फलीभूत होगी। नए अनुबंध होंगे। कष्ट होगा। पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ने से व्यस्तता बढ़ेगी। कार्य में नवीनता के भी योग हैं।

सिंह कानूनी अड़चन दूर होगी। अध्यात्म में रुचि रहेगी। यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। रुके धन के लिए प्रयत्न जरूर करें। कार्य का विस्तार होगा।

कन्या चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें, बाकी सामान्य रहेगा। प्रयास अधिक करने पर भी उचित सफलता मिलने में संदेह है।

तुला जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। राजकीय बाधा दूर होगी। बेचैनी रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। अर्थ प्राप्ति के योग बनेंगे। विवादों से दूर रहना चाहिए।

वृश्चिक बेरोजगारी दूर होगी। विवाद न करें। संपत्ति की खरीद-फरोख्त हो सकती है। आय बढ़ेगी। मन में उत्साहपूर्ण विचारों के कारण समय सुखद व्यतीत होगा।

धनु रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। किसी बड़े कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। प्रसन्नता बनी रहेगी। नए कार्यों से जुड़ने का योग बनेगा। पूजा-पाठ में मन लगेगा।

मकर बुरी खबर मिल सकती है। विवाद को बढ़ावा न दें। भागदौड़ रहेगी। आय में कमी होगी। किसी कार्य में प्रतिस्पर्धात्मक तरीके से जुड़ने की प्रवृत्ति आपके लिए शुभ रहेगी।

कुम्भ मेहनत का फल पूरा-पूरा मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। लाभ होगा। दूर रहने वाले व्यक्तियों से संपर्क के कारण लाभ हो सकता है।

मीन मेहमानों का आवागमन होगा। व्यय होगा। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। प्रसन्नता रहेगी। अपने प्रयासों से उन्नति पथ प्रशस्त करेंगे। व्यापार अच्छा चलेगा। रुका पैसा मिलेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

बॉलीवुड की फ्लॉप फिल्मों के लिए मैं भी जिम्मेदार : करन

पिछले कुछ समय में बॉलीवुड फिल्मों की सफलता के आंकड़े पर गौर किया जाए तो ग्राफ नीचे आता दिखेगा। फिल्मों के कंटेंट को लेकर लगातार प्रश्न उठाए जा रहे हैं। साथ ही सिर्फ रीमेक बनाने पर जोर दिए जाने पर भी चर्चा होती रहती है। अब इस कड़ी में फिल्ममेकर करण करण जौहर ने बॉलीवुड की असफलता का ठीकरा खुद पर फोड़ा है। उनके अनुसार, इस असफलता में कहीं ना कहीं वे भी जिम्मेदार हैं। बीते कुछ समय में जहां क्षेत्रीय सिनेमा उभरकर सामने आया है। वहीं, बॉलीवुड में लगातार फिल्में फ्लॉप हो रही हैं। साथ ही फिल्मों की कमाई का प्रतिशत भी गिरा है। इसे लेकर हाल ही यू-ट्यूब चैनल गलट्टा प्लस पर कई सेलेब्स का इंटरव्यू हुआ। इस दौरान बॉलीवुड फिल्मों के फ्लॉप होने पर भी बातचीत हुई। इस दौरान करण ने माना कि इसके लिए कहीं ना कहीं वे भी जिम्मेदार हैं। करण का का बातचीत के दौरान कहना था, 'फिल्मों के बिजनेस पर बीते कुछ समय से फर्क पड़ा था क्योंकि अब दिल्ली व मुंबई के 60 से 70 प्रतिशत दर्शक ही फिल्में देखने जा रहे हैं। कोरोना से पहले जिस तरह से लोग फिल्में देखने जाया करते थे, उस तरह से कोरोना के बाद नहीं जा रहे हैं। अब फिल्में पहले की तरह कमाई नहीं कर रही हैं। जो फिल्में पहले 70 करोड़ रुपये तक का व्यवसाय कर लेती थीं। अब उन्हीं फिल्मों का बिजनेस घटकर 30 करोड़ रुपये तक आ गया है। हिंदी सिने जगत को लेकर करण का कहना था कि यहां दृढ़ विश्वास और आस्था की कमी है। उनका कहना था, '70 के दशक में हमारे पास सलीम जावेद जैसे लोग थे, जो जीवं?त किरदारों को उकेरते थे। वे लोग असल किरदारों को गढ़ते थे। लेकिन फिर 80 के दशक में हमने रीमेक पर ध्यान देना शुरू कर दिया। इसके बाद 90 के दशक में सिर्फ लव स्टोरीज बनने लगीं। यानी हम सभी भेड़चाल का हिस्सा बन गए और इसमें मैं भी शामिल हूं।

200 करोड़ के क्लब में शामिल हुई दृश्यम-2

बॉलीवुड | मसाला

दृश्यम 2 की बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई जारी है। दृश्यम 2 अब 200 करोड़ के क्लब में शामिल होने वाली अजय देवगन की तीसरी फिल्म बन गई है। चौथे हफ्ते तक आते-आते फिल्म ने 203.59 करोड़ की कमाई कर ली है। इससे पहले अजय की 2020 में आई फिल्म तान्हा जी द अनसंग वारियर और 2017 में गोलमाल अगेन ने 200 करोड़ से ज्यादा की कमाई की थी। करीब 60 करोड़ के बजट में बनी ये फिल्म अजय देवगन के करियर की दूसरी सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर बनने की राह पर है।

ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श ने फिल्म का लेटेस्ट शेयर करते हुए लिखा- दृश्यम-2 200 करोड़ क्लब में शामिल हो गई है। अजय देवगन की डबल सेंचुरी लगाने वाली तीसरी फिल्म बनी। 2017- गोलमाल अगेन-दिवाली हॉलीडे दिन-24 । 2020-तान्हाजी नॉन हॉलीडे दिन 15। 2022 - दृश्यम 2 नॉन हॉलीडे दिन 23। सप्ताह-4 शुक्रवार 2.62 करोड़, शनिवार 4.67 करोड़ कुल - 203.59 करोड़। दृश्यम 2 ने 200 करोड़ का आंकड़ा रिलीज के 23वें दिन पार किया है। खास बात ये है कि ये फिल्म किसी छुट्टी के दिन नहीं रिलीज हुई है। नॉन हॉलीडे रिलीज के बावजूद फिल्म का कलेक्शन काफी शानदार है।

200 करोड़ के क्लब में शामिल होने वाली अजय की तीसरी फिल्म

नई फिल्मों के रिलीज के बावजूद दृश्यम 2 की कमाई पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ रहा है। फिल्म ने 200 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है। दृश्यम 2 अजय देवगन के करियर की तीसरी सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म है।

इससे पहले 2020 में आई फिल्म तान्हा जी द अनसंग वारियर ने 279.55 करोड़ का लाइफटाइम कलेक्शन किया था। इसके बाद 2017 में आई उनकी फिल्म गोलमाल अगेन ने 205.69 करोड़ का कलेक्शन किया था। अब 203.59 करोड़ के साथ दृश्यम 2, गोलमाल अगेन के लाइफटाइम कलेक्शन के रिकॉर्ड को तोड़ने से चंद दूरी पर है।

दृश्यम 2 का बजट 60 करोड़ के आस-पास था। फिल्म ने रिलीज के तीसरे दिन ही 64 करोड़ की कमाई के साथ अपने बजट का पूरा हिस्सा निकाल लिया था।

'भेड़िया' ने बजाई वरुण धवन के करियर में खतरे की घंटी

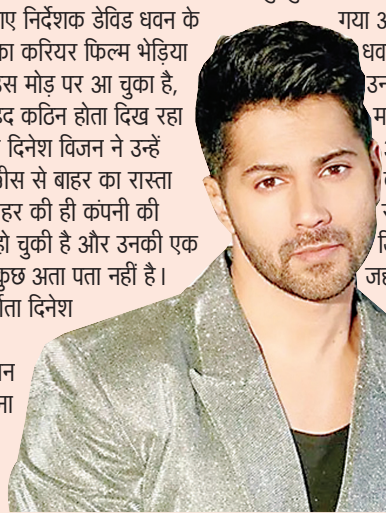

कभी निर्माता निर्देशक करण जौहर की खोज कहलाए निर्देशक डेविड धवन के बेटे वरुण का करियर फिल्म भेड़िया की असफलता के बाद उस मोड़ पर आ चुका है, जहां से उनका रास्ता बेहद कठिन होता दिख रहा है। भेड़िया के ही निर्माता दिनेश विजन ने उन्हें अपनी अगली फिल्म इक्कीस से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। करण जौहर की ही कंपनी की फिल्म मिस्टर लेले बंद हो चुकी है और उनकी एक और फिम शुद्धि का भी कुछ अता पता नहीं है।

भेड़िया के बाद निर्माता दिनेश विजन की अगली फिल्म इक्कीस में भी वरुण धवन काम करने वाले थे। इतना ही नहीं स्त्री 2 में भी वरुण धवन के नाम की सुगबुगाहट हो रही थी, लेकिन वह भी मामला शांत हो गया और अचानक इक्कीस से भी वरुण धवन के नाम का पत्ता कट गया और उनकी जगह फिल्म में बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा आ गए। फिल्म इक्कीस की कहानी परमवीर चक्र विजेता सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल की जिंदगी से प्रेरित है। फिल्म का निर्माण जहां दिनेश विजन कर रहे हैं, तो वहीं फिल्म का निर्देशन श्रीराम राघवन करने वाले हैं। वरुण धवन निर्देशक श्रीराम राघवन के साथ पहले फिल्म बदलापुर फिल्म में काम कर चुके हैं। श्रीराम राघवन के साथ वरुण धवन एक बार फिर काम करने को लेकर उत्साहित थे। लेकिन अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा ने वरुण धवन को रिप्लेस कर दिया। इस खेल को समझने से पहले थोड़ा सा पीछे चलते हैं। बदलापुर के बाद निर्देशक श्रीराम राघवन अपनी फिल्म अंधाधुन में भी वरुण धवन के साथ काम करना चाह रहे थे। लेकिन वरुण धवन ने 'अंधाधुन' में काम करने का ऑफर ठुकरा दिया था, तब श्रीराम राघवन ने आयुष्मान खुराना को लेकर फिल्म बनाई। अब जब भेड़िया का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन ठीक नहीं रहा तो श्रीराम राघवन ने वरुण धवन को रिप्लेस कर दिया। इसके अलावा करण जौहर की फिल्म मिस्टर लेले और शुद्धि में वरुण धवन काम करने वाले थे। इस फिल्म की घोषणा बहुत पहले हो चुकी है। लेकिन फिल्म की शूटिंग को लेकर कोई अपडेट नहीं है।

अजब-गजब | चुनौतीपूर्ण समय से गुजरने के लिए खुद को किया भावनात्मक रूप से मजबूत

अपनी पालतू बिल्ली के सहारे महिला ने दी ब्रेस्ट कैंसर को मात

पिछले साल मार्च में कोरोना वायरस के दौरान हॉन्ग कॉन्ग की रहने वाली सिंडी चेंग को पता चला कि उन्हें स्टेज-2 का ब्रेस्ट कैंसर है। इसे जानते ही वो डिप्रेशन में चली गईं। अगले 12 महीनों में, चेंग ने कीमोथेरेपी की, उसके बाएं स्तन में एक गांठ को हटाने के लिए सर्जरी हुई और कीमोथेरेपी हुई। इस समय के दौरान, उन्हें इस बात की चिंता थी कि इलाज का उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा और क्या उनकी स्थिति और बिगड़ेगी।

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट से बातचीत करते हुए हॉन्ग कॉन्ग में रहने वाली अंग्रेजी की टीचर ने कहा, 'मुझे पता था कि कैंसर का इलाज किया जा सकता है, लेकिन मुझे अभी भी डर था कि मेरे साथ क्या होगा'। वह पर्सनल संबंधों के मुद्दों का भी सामना कर रही थी और अपनी बीमा कंपनी से परेशान थी, जिससे वह निराश और गुस्से में भी थी। अपनी भावनात्मक रूप से नाजुक स्थिति के बावजूद, उन्होंने चुनौतीपूर्ण समय से गुजरने के लिए खुद को मजबूत रहने के लिए कहा।

ऐसे मुश्किल समय में चेंग को अपनी पालतू बिल्लियों का साथ मिला। उन्होंने न केवल उसे

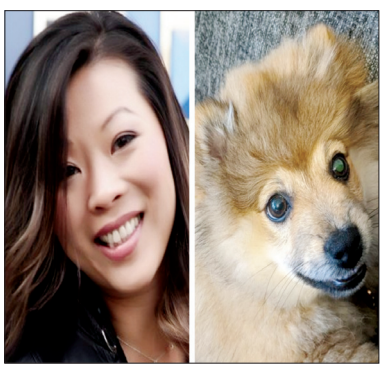

बीमारी को मात देने की ताकत दी, बल्कि उसे ठीक होने के लिए लड़ने के लिए प्रेरित भी किया। उन्होंने कहा, 'मुझे अपने पति, परिवार, दोस्तों और नौकर से समर्थन मिला था, लेकिन मुझे अपनी चार बिल्लियों से भी आराम मिला।'

उन्होंने कहा, 'कीमोथेरेपी के बाद का दर्द असहनीय था। मेरे मुंह में 30 से ज्यादा छाले थे और मेरे जोड़ों में चोट लगी थी। मैं भी ज्यादा कमजोर और थका हुआ महसूस कर रही थी। इन सबके बीच मुझें अपनी बिल्लियों का सहारा मिला। उन्हें पकड़ना, चूमना और गले लगाना। ये मेरा तनाव कम करता है और मेरे शारीरिक दर्द को कम करता है। जब कीमोथेरेपी के दौरान मेरे बाल झड़ गए, लेकिन मेरी बिल्लियों को इस बात की परवाह नहीं थी कि मैं कैसी दिखती हूं।'

इस बात के सबूत हैं कि पालतू जानवर लाइलाज या पुरानी बीमारी के दौरान मददगार हो सकते हैं। 2019 में जर्नल सर्कुलेशन कार्डियोवास्कुलर क्वालिटी एंड आउटकम्स में प्रकाशित एक बड़े स्वीडिश अध्ययन में पाया गया कि कुत्ते का स्वामित्व एक प्रमुख हृदय संबंधी घटना के बाद बेहतर परिणाम से जुड़ा है। शोधकर्ताओं ने कहा कि कुत्ते रखने से रोगियों को शारीरिक गतिविधि के लिए सामाजिक समर्थन और प्रेरणा प्रदान करता है। सोशल साइंसेज जर्नल में 2018 में प्रकाशित एक छोटे से कनाडाई अध्ययन ने सुझाव दिया कि पालतू जानवरों के साथ रहने से पुराने दर्द वाले लोगों को अधिक अच्छी नींद लेने और स्वस्थ सोने की दिनचर्या स्थापित करने में मदद मिल सकती है।

दुनिया का सबसे जहरीला सांप है इनलैंड ताइपन, काटने से हो जाती है मौत

सांप का नाम सुनते ही डर से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। धरती पर सांपों की 3,000 से अधिक प्रजातियां हैं और वे अंटार्कटिका, आइसलैंड, आयरलैंड, ग्रीनलैंड और न्यूजीलैंड को छोड़कर हर जगह पाए जाते हैं। लगभग 600 प्रजातियां विषैली होती हैं, और सिर्फ लगभग 200 यानी सात प्रतिशत सांप ऐसे होते हैं जिसके जहर से इंसानों की मौत हो सकती है। लेकिन क्या आप जाने हैं कि दुनिया का सबसे ज़हरीला सांप कौन सा हैं? ब्रिटानिका के मुताबिक इनलैंड ताइपन (ऑक्सीयूरेनस माइक्रोलेपिडोटस) दुनिया का सबसे ज़हरीला सांप है। ये सांप मुख्य तौर पर ऑस्ट्रेलिया में पाये जाते हैं। इस सांप के पास सबसे घातक विष है, जो चूहों पर किए गए परीक्षण, मीडियन लेथल डोज़, या LD50 पर आधारित है। मरियम वेबस्टर के अनुसार, LD50 परिभाषित करता है एक जहरीले एजेंट की मात्रा (जैसे जहर, वायरस या विकिरण) जो आमतौर पर एक निश्चित समय के भीतर जानवरों की 50 प्रतिशत आबादी को मारने के लिए पर्याप्त है। इंलैंड ताइपन स्वाभाव के बेहद शर्मीले होते हैं। लेकिन किसी भी जानवर की तरह, उकसाने पर ये हमला कर देता है। जब वे हमला करते हैं तो ये कुछ ही सेकेंड में एक से ज्यादा बार काट सकते हैं। इंडलैंड ताइपन के काटने के लक्षणों में सिरदर्द, उल्टी, पेट में दर्द, और लकवा शामिल हैं। जहर में एक फैलने वाला कारक या हाइलूरोनिडेज़ एंजाइम भी होता है, जो काटे गए व्यक्ति के शरीर में विषाक्त पदार्थों के स्तर को बढ़ाता है। मेलबर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया में विष अनुसंधान इकाई के मुताबिक 2015 तक दुनिया के शीर्ष पांच ज़हरीले ज़मीनी सांप हैं- 1. इनलैंड ताइपन 2.ईस्टर्न ब्राउन सांप, 3. कोस्टल ताइपन, 4. टाइगर स्नेक, 5. ब्लेक ट्इगर स्नेक।

नफरती बयानों पर तत्काल हो सख्त कार्रवाई : डीजीपी

» सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश व दिल्ली सहित तीन राज्यों से ऐसे मामलों पर मांगी थी रिपोर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश (यूपी) के पुलिस प्रमुख ने शिकायत का इंतजार किए बिना राज्य में नफरत से भरे बयानों के मामले में पुलिस को खुद सख्त कार्रवाई का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट के उत्तर प्रदेश सहित तीन राज्यों से ऐसे मामलों में की गई कार्रवाई पर एक रिपोर्ट देने के लिए कहने के बाद ये आदेश दिया गया था। जिसमें कहा गया था कि किसी भी घृणा अपराध या अभद्र भाषा के उपयोग के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आदेश दिया गया है।

डीजीपी का आदेश कहता है कि अभद्र भाषा या घृणा अपराध के मामले में शिकायत हासिल होने पर या कोई शिकायत न होने की हालत में पुलिस को स्वयं संज्ञान लेना चाहिए और एफआईआर दर्ज करनी चाहिए और आरोपी के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के

उस आदेश का भी उल्लेख किया है कि इन आदेशों का पालन करने में किसी भी लापरवाही को 'अदालत की अवमानना' के रूप में देखा जा सकता है और संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जा

राज्यों को दिया था नोटिस

सुप्रीम कोर्ट ने इस साल 21 अक्टूबर को यूपी, दिल्ली और उत्तराखंड की सरकारों को एक नोटिस जारी किया था। जिसमें नफरत भरे बयानों के मामलों में क्या कार्रवाई की गई थी, इस पर रिपोर्ट मांगी गई थी। शाहीन अब्दुल्ला नाम के एक शख्स ने अपनी याचिका में कहा था कि देश में मुसलमानों के खिलाफ नफरत भरे बयानों का बोलबाला है। अपने अंतरिम निर्देश में सुप्रीम कोर्ट ने तीनों राज्यों को आदेश दिया कि जब भी कोई नफरत भरा बयान या काम होता है, तो भारतीय दंड संहिता की धारा 153A, 153B और 295A और 505 का मामला बनता है। कोई शिकायत नहीं होने पर भी मामला दर्ज करके कानून के अनुसार अपराधियों के खिलाफ स्वत: कार्रवाई की जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों से यह भी कहा कि वे अपने अधीनस्थों को निर्देश जारी करें ताकि जल्द से जल्द कानूनी आधार पर उचित कार्रवाई की जा सके।

राहुल ने वेदीप्रसाद मीणा के घर पी चाय

किसान ने रखी बिजली बिल ज्यादा आने की शिकायत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सवाईमाधोपुर। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का आज राजस्थान में 8वां दिन है। आज यात्रा बूंदी जिले से सवाई माधोपुर जिले में प्रवेश कर चुकी है। सवाईमाधोपुर जिले में प्रवेश करते ही राहुल गांधी ने खिजूरी गांव में टी ब्रेक लिया। राहुल गांधी एक किसान वेणीप्रसाद मीणा के घर पर चाय के लिए रुके। इस दौरान किसान ने राहुल गांधी को कहा कि उसका बिजली का बिल ज्यादा आता है। बिजली के बिल में भी कोई छूट नहीं मिल रही है। बिजली कर्मचारी मीटर रीडिंग के लिए आते नहीं है। मनमर्जी के बिल भेजते हैं।

किसान यहीं नहीं रुका और उसने राहुल गांधी के सामने पूरी भड़ास निकालते हुए कहा कि पूरे गांव के यही हाल हैं। उसे खाद के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। खाद का जो कट्टा 270 रुपये का आता है वो कालाबाजारी के चलते 600 रुपये में खरीदने के लिए मजबूर हो रहे हैं। वहीं उसके लिए भी लंबी लाइन में लगना पड़ता हैं। किसान वेणीप्रसाद मीणा ने बताया कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि राहुल गांधी उनके घर आएंगे। सुबह 5 बजे उनकी टीम के लोग आए और कहा कि राहुल गांधी आपके यहां टी ब्रेक करना चाहते हैं। हमने भी तुरंत कह दिया, पधारो। टी ब्रेक के दौरान राहुल के साथ उनकी बहिन प्रियंका गांधी भी मौजूद रहीं और सबके साथ फोटो खिंचवाई।

बेटियों के सिर पर हाथ रखकर कहा-खूब पढ़ो

राहुल गांधी जिस किसान वेणीप्रसाद मीणा के घर पर रुके थे उनके तीन बेटियां और दो बेटे हैं। राहुल ने घर से निकलते समय किसान की बेटियों के सिर पर हाथ रखा। राहुल ने उनसे उनकी पढ़ाई के बारे में पूछा और कहा खूब पढ़ाई करो। मन लगाकर पढ़ाई करना। वहीं उन्होंने सभी बच्चों को चॉकलेट भी दी। घर पर मौजूद किसान के 6 साल के भतीजे को गोद मे लेकर उसे चॉकलेट खिलाई और फोटो खिंचवाई।

किसानों के राहुल-राहुल चिल्लाने पर पास बुलाया

राहुल गांधी टी ब्रेक के लिए किसान के घर की छत पर पहुंचे। उस दौरान उससे एक मकान छोड़ कर दो किसान भरतलाल मीणा और गोपाल गुर्जर अपने घर की छत पर मौजूद थे। दोनों राहुल गांधी-राहुल गांधी चिल्ला रहे थे। राहुल ने दोनों को देखा तो अपने पास बुला लिया। छत पर पहुंचने के बाद राहुल ने दोनों किसानों से आत्मीयता के साथ मुलाकात की। किसान भरतलाल मीणा ने बताया कि राहुल ने उनसे उनका नाम पूछा। क्या काम करते हो यह भी पूछा।

ऐसी चीजें ऑफर की जो हमने कभी देखी नहीं थी

किसानों ने जब बताया कि वे खेती करते हैं तो राहुल ने पूछा कि कितनी जमीन है। क्या क्या उगाते हो। दोनों ने किसानों ने बताया कि राहुल ने उनके साथ गर्मजोशी से कई बार हाथ मिलाया। कंधे पर हाथ रखकर फोटो भी खिंचवाई. किसान गोपाल गुर्जर ने बताया कि राहुल ने हमें अपने साथ नाश्ता करने का भी ऑफर दिया। उन्होंने हमें ऐसी ऐसी चीजें ऑफर की जो हमने कभी देखी भी नहीं थी. दोनों कहा कि हम राहुल गांधी से मिलकर काफी खुश हैं।

चित्रकूट में एक्सपायरी इंजेक्शन लगने से 9 माह की बच्ची की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चित्रकूट। यूपी के चित्रकूट जिले में नौ माह की बच्ची को एक्सपायरी डेट का इंजेक्शन लगाने से उसकी मौत हो गई। परिजनों ने आरोप लगाया कि एक्सपायरी डेट का इंजेक्शन लगाया गया है। इस मामले में सीएमएस डॉक्टर सुधीर कुमार शर्मा ने प्रथम दृष्टया फार्मेसिस्ट और वार्ड बॉय को निलंबित कर जांच के आदेश दिए हैं। इंजेक्शन को कोतवाली पुलिस ने जांच के लिए अपने कब्जे में लिया है।

शहर के शंकर बाजार निवासी धनंजय की 9 माह की पुत्री की रविवार को तबीयत खराब हुई थी। जुकाम-खांसी की शिकायत पर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया था। डॉक्टर ने बच्ची को निमोनिया से ग्रसित बताया था। परिजनों ने आरोप लगाया कि सोमवार सुबह उसे ड्यूटी पर मौजूद फार्मेसिस्ट और वार्ड ब्वाय ने एक्सपायरी डेट का इंजेक्शन लगाया जिससे बालिका की तबीयत खराब हुई और कुछ देर बाद उसकी

मौत हो गई। इसकी जानकारी होते ही परिजनों ने अस्पताल में हंगामा शुरू कर दिया। एसडीएम सदर सीओ सिटी व कोतवाल के अलावा समाजवादी पार्टी के सदर सीट के विधायक अनिल प्रधान भी मौके पर पहुंचे। सदर विधायक ने इसे लापरवाही का मामला बताया।

प्रथम दृष्टया सीएमएस डॉक्टर सुधीर शर्मा ने वार्ड बॉय और फार्मेसिस्ट को निलंबित कर जांच करने के आदेश दिए हैं। जिस इंजेक्शन को लगाने की बात परिजनों ने कही है उसे पुलिस ने अपने कब्जे में लिया है।

निकाय चुनाव : वाराणसी में सपा ने लिया प्रत्याशियों का फीडबैक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। यूपी नगर निकाय चुनाव की तैयारियों के लिए वाराणसी में समाजवादी पार्टी ने विधानसभावार बैठक की। इसमें निकाय चुनाव प्रभारियों में शामिल विधायक आरके वर्मा और विधायक जाहिद बेग ने दावेदारों के साथ बैठक कर चुनाव की रणनीति तय की। उन्होंने बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं और पुराने नेताओं से फीडबैक लिया।

पार्टी ने जीत के लिए मजबूत प्रत्याशियों के नाम तय कर दिए हैं। पार्टी मुख्यालय से जल्द ही प्रत्याशियों के नाम की घोषणा की जाएगी। कैंट विधानसभा की सगुन लॉन, उत्तरी विधानसभा की अकथा चौराहे के पास उत्सव वाटिका, दक्षिणी विधानसभा की गणेश मंडपम नाटी इमली में बैठक हुई। निकाय चुनाव प्रभारियों ने कहा कि प्रत्याशी चयन में पारदर्शिता बरती जाएगी। जातीय समीकरण और मेहनती कार्यकर्ताओं को ध्यान में रखकर पार्टी आगे की रणनीति बनाएगी। गणेश परिक्रमा वालों के नाम पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। सभी 100 वार्डों के दावेदारों से रूबरू होकर प्रभारी लखनऊ जाएंगे और जल्द ही प्रत्याशियों की घोषणा कर दी जाएगी। बैठक में पूर्व मंत्री सुरेंद्र पटेल, मनोज राय धूपचंडी, पूजा यादव, किशन दीक्षित, अशफाक अहमद, एमएलसी लाल बिहारी यादव, निवर्तमान जिलाध्यक्ष सुजीत यादव, निवर्तमान महानगर अध्यक्ष विष्णु शर्मा, संतोष यादव आदि शामिल रहे।

हाइवे पर ट्रक से टकराई कार के परखच्चे उड़े

» बीच रास्ते में अचानक ट्रक के खड़े होने से हुआ हादसा, आठ की हालत गंभीर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कुशीनगर जिले में सोमवार की सुबह बिहार के गोपालगंज की ओर जा रही कार तमकुहीराज थाना क्षेत्र बनवरिया कट के पास अचानक विपरीत दिशा से आए ट्रक से टकरा गई। दुर्घटना में सवार चार लोग घायल हो गए। इस कार के पीछे चल रही एक अन्य कार में सवार दो लोग भी मामूली रूप से घायल हुए। सूचना पर पहुंचे चौकी प्रभारी तमकुहीराज मृत्युंजय सिंह और एनएचएआई की टीम ने स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को सीएचसी तमकुहीराज

पहुंचाया, जहां उनका उपचार चल रहा है।

बताया जा रहा है कि बिहार के गोपालगंज पुरानी चौक निवासी ममता देवी (42), उनके परिवार की अनामिका(23), नेहा (21) और मयंक कुमार (22)के साथ कसया से गोपालगंज लौट रही थीं। बनवरिया कट के पास विपरीत दिशा में स्थित पेट्रोलपंप से आ रहा ट्रक अचानक बीच रास्ते मे खड़ा हो गया। घने कोहरे के कारण चालक कार पर नियंत्रण नहीं रख सके, जिससे कार की टक्कर हो गई। इस कार के पीछे से आ रही दूसरी कार भी टकरा गई। दूसरी कार में सवार गोपालगंज निवासी निर्भय सिंह अपने साथी के साथ गोरखपुर से गोपालगंज लौट रहे थे। उन दोनों को मामूली चोट लगी।

ट्रक में घुसी पिकअप दस वाहन दुर्घनाग्रस्त चाल की हालत नाचुक

हाटा कोतवाली के सुकरौली में सोमवार की सुबह पेट्रोल पंप के समीप हाइवे पर खड़े ट्रक में एक पिकअप ने पीछे से टक्कर मार दी। कोहरे के कारण हुई दुर्घटना में लोग बचाव कर पाते। तभी पीछे से आए एक दूसरे ट्रक की टक्कर हो गई। इस घटना में ट्रक चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर पहुंची पुलिस और हाइवे टीम ने बचाव कार्य किया। कुछ ही देर बाद दूसरी लेन में एक ट्रक ने दूसरे वाहन में टक्कर मार दी। इसके बाद करीब दस गाड़ियां आपस में टकरा गईं, जिससे कुछ देर तक आवागमन बाधित हुआ। इस दौरान गोरखपुर से पडरौना आ रही अनुबंधित बस भी टकरा गई। बस ड्राइवर भी घायल हो गया। अन्य सवारियां सुरक्षित रहीं।

दस मिनट में ही टूटीं देशमुख के जेल से बाहर आने की उम्मीदें

13 महीनों से न्यायिक हिरासत में बंद हैं पूर्व गृह मंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भ्रष्टाचार सम्बंधी मामलों को लेकर जेल की हवा खा रहे महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख की जेल से बाहर आने की उम्मीदों को एक बार फिर झटका लगा है। इस बार तो जमानत मिल भी गई थी, लेकिन इसके 10 मिनट बाद ही सीबीआई की अंतिम दलील ने पूरे खेल को ही पलट कर रख दिया और देशमुख के बाहर आने की उम्मीदें चकनाचूर हो गईं। दरअसल, देशमुख को बेल मिलने के बाद सीबीआई ने हाईकोर्ट के सामने सुप्रीम कोर्ट जाने की बात कही, जिसके बाद अदालत ने उन्हें अनुमति दे दी और इस संदर्भ में खुद के आदेश पर 10 दिनों के लिए रोक लगा दी।

बता दें कि देशमुख लगभग 13 महीनों से न्यायिक हिरासत में बंद हैं। देशमुख एक ही आरोप से उत्पन्न दो जांचों में उलझे हुए हैं। एक केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा भ्रष्टाचार के अपराध के लिए और दूसरा प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा मनी लॉन्ड्रिंग के अपराध के लिए। हालांकि, देशमुख को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में बॉम्बे हाई कोर्ट ने 4 अक्टूबर को जमानत दे दी थी। लेकिन सीबीआई वाले मामले में, विशेष अदालत ने उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया था और उसी को देशमुख ने उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दी थी। वरिष्ठ अधिवक्ता विक्रम चौधरी और देशमुख की ओर से पेश अधिवक्ता अनिकेत निकम ने तर्क दिया कि चूंकि दोनों मामले जुड़े हुए हैं और देशमुख को ईडी मामले में जमानत दी गई थी, इसलिए उन्हें सीबीआई मामले में जमानत दी जानी चाहिए। चौधरी ने तर्क दिया कि देशमुख ने कथित रूप से एक अपराध करने के लिए एक वर्ष से अधिक समय व्यतीत किया है इसलिए अब उन्हें जमानत मिलनी चाहिए। लेकिन सीबीआई ने इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने की बात कही। जिसके बाद अदालत ने उन्हें अनुमति दे दी और इस संदर्भ में 10 दिनों के लिए आदेश पर रोक लगा दी।

वहीं, सीबीआई की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल अनिल सिंह ने याचिका का विरोध करते हुए कहा कि मंत्री उच्चतम स्तर के भ्रष्टाचार में शामिल थे, जिसने राज्य में शासन को प्रभावित किया। सिंह ने यह भी तर्क दिया कि मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दी गई जमानत विधेय अपराध में जमानत देने का आधार नहीं हो सकती है।

राजभर बोले, दस साल मेहनत करें चाचा-भतीजा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अंबेडकरनगर। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर अखिलेश यादव के कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले सुभासपा के राट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर चुनाव में हारते ही सपा से पूरी तरह से अलग हो गए हैं। अब वो अक्सर सपा पर दिए गए अपने बयानों को लेकर चर्चा में बने रहते हैं।

एक बार फिर उन्होंने समाजवादी पार्टी को लेकर कुछ ऐसा ही बयान दिया है। राजभर ने कहा कि सपा अगले 10 साल तक सत्ता में नहीं आएगी। सपा से लोग नाराज ही नहीं बल्कि नफरत भी करते हैं। यही कारण है कि सपा को आम समर्थन नहीं मिल पा रहा है। सपा से दूरी बनाने के बाद सुभासपा प्रमुख ओमप्रकाश राजभर सपा सुप्रीमो को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। सपा व प्रसपा के विलय पर ओपी राजभर ने कहा कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। सपा से ऊबे लोग ही प्रसपा में गए थे, अब वही लोग लौट आए हैं।

फोटो :4 पीएम

यात्रा उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व पूर्व सांसद बृजलाल खाबरी तथा प्रांतीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री नकुल दुबे के नेतृत्व में चारबाग स्थित रविन्द्रालय से सोमवार को प्रादेशिक भारत जोड़ो यात्रा निकाली गई। यात्रा में सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल हुए।

नीतीश के बयान से बिहार की राजनीति में बदलाव की आहट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। जेडीयू के खुले अधिवेशन में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दिए हुए बयान से एक बार फिर राजनीतिक गलियारों में हलचल बढ़ गई है। नीतीश ने अधिवेशन में कहा कि 2024 लोकसभा चुनाव के लिए उनकी ओर से विपक्ष को एकजुट कर जो गठबंधन बनाया जाएगा वह थर्ड फ्रंट नहीं, बल्कि फर्स्ट फ्रंट होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि बीजेपी ने साथ रहते हुए हमारी पीठ में छुरा घोपा और अरुणाचल प्रदेश के साथ सिक्किम के जेडीयू विधायकों को अपने दल में शामिल करा लिया। जेडीयू की बैठक में इस तरह की बातें सामने आने के बाद भी राजनीतिक गलियारे में यह चर्चा जोरों पर है कि आने वाले समय में जेडीयू फिर से एनडीए में शामिल हो सकती है। ऐसे में इस तरह के बयान से एक बार फिर बिहार की राजनीति में गर्माहट आ गई है। क्योंकि नीतीश की फितरत से भी हर कोई भली-भांति वाकिफ है।

बुआ पर बोले बबुआ, मिशन से भटक गई है बसपा

» बसपा प्रमुख मायावती ने लगाया था सपा और भाजपा पर उपचुनाव में मिलीभगत का आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मैनपुरी में मिली ऐतिहासिक जीत के बाद समाजवादी पार्टी के हौसले काफी बुलंद हैं। वहीं दूसरी ओर अखिलेश की नई सोशल इंजीनियरिंग से बसपा प्रमुख मायावती काफी परेशान चल रही हैं। ऐसे में मायावती ने सपा और भाजपा पर मिलीभगतका आरोप लगाया है। बसपा प्रमुख ने रामपुर विधानसभा सीट पर उपचुनाव में समाजवादी पार्टी की हार को लेकर सवाल खड़े किए हैं।

उन्होंने आजम खान की सीट पर मिली हार को लेकर सपा और बीजेपी के बीच अंदरूनी मिलीभगत की बात कही। साथ ही मायावती ने चिंतन करते हुए धोखे से बचने की अपील भी की है। हालांकि, मायावती के इस बयान का सपा प्रमुख अखिलेश ने भी जवाब दिया है। मायावती ने सपा-भाजपा पर मिलीभगत की बात करते हुए ट्वीट करते हुए कहा कि यूपी के मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव में सपा की हुई जीत, लेकिन रामपुर विधानसभा उपचुनाव में आजम खान की खास सीट पर योजनाबद्ध कम वोटिंग करवा कर सपा की पहली बार हुई हार पर यह चर्चा काफी गर्म है कि कहीं यह सब सपा और भाजपा की अंदरूनी मिलीभगत का ही परिणाम तो नहीं? उन्होंने आगे मुस्लिमों से अपील करते हुए कहा कि इस बारे में खासकर मुस्लिम समाज को काफी चिंतन करने और समझने की भी जरूरत है, ताकि आगे होने वाले चुनावों में धोखा खाने से बचा जा सके। खतौली विधानसभा की सीट पर भाजपा की हुई हार को भी लेकर वहां काफी संदेह बना हुआ है। यह भी सोचने की बात है।

बसपा सुप्रीमो के इस बयान पर सपा प्रमुख ने कहा कि वह क्या कहती हैं, उस पर कुछ नहीं कहूंगा। हालांकि, इतना जरूर कहा कि काशीराम और अंबेडकर जी के सिद्धांतों से बसपा भटक गई है। वहीं, चाचा शिवपाल के साथ रहने की बात भी अखिलेश ने कही।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।